03 अध्याय
मुद्रा और साख

1. परिचय

''मुद्रा'' शब्द काफी रुचि उत्पन्न करती है। आज के व्यस्त जीवन में मुद्रा एक महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त कर ली है। जब हम अपनी आवश्यकता की संतुष्टि के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करते हैं तो हमें मुद्रा की आवश्यकता होती है। मुद्रा का प्रयोग अनेक प्रकार के लेन – देन (अर्थात क्रय– विक्रय) में किया जाता है। एक क्रेता के रूप में वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय करने के लिए मुद्रा द्वारा भुगतान करते हैं और एक विक्रेता के रूप में हम उन्हें बेचकर मुद्रा प्राप्त करते हैं। किंतु क्या आप जानते हैं कि प्राचीन काल में लोग वस्तुओं के बदले वस्तुओं का लेन–देन या विनिमय करते थे। यह वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाता है। समय के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली का स्थान मुद्रा ने ले लिया।

2. उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :–

- वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है :
- वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष :
- मुद्रा क्या है :
- मुद्रा के कार्य :
- मुद्रा के प्रकार :

3. वस्तु विनिमय प्रणाली

वस्तु विनिमय प्रणाली उस प्रणाली को कहा जाता है जिसमें एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु का आदान–प्रदान होता है दूसरे शब्दों में, किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु के साथ बिना मुद्रा के प्रत्यक्ष रूप से लेनदेन वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाता है।

उदाहरण के लिए गेहूँ से चावल बदलना, सब्जी से तेल बदलना, दूध से दही बदलना आदि । यह प्रणाली पुराने जमाने में प्रचलित थी ।

अभ्यास प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की परिभाषा।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली के दो उदाहरण।

© JCERT not to be republished

4. वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष :

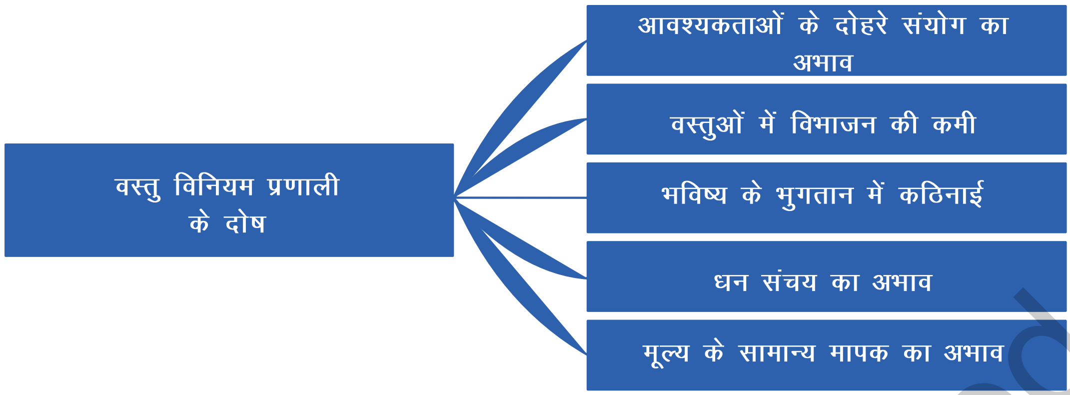

चित्र संख्या 3.1

4.1 **आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव** : वस्तु का वस्तु के साथ विनिमय तभी संभव हो सकता है जब दो ऐसे व्यक्ति परस्पर विनिमय करें जिन्हें एक दूसरे की वस्तु की आवश्यकता हो। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति को कपड़ा चाहिए और उसके बदले में देने के लिए चावल है तो वह विनिमय तब कर सकेगा जब उसे ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो चावल के बदले कपड़ा दे सके। इस प्रकार आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या उत्पन्न होती है।

4.2 **वस्तु के विभाजन की कमी** : कुछ वस्तुएं भौतिक रूप से, छोटे टुकड़ों में विभाजित नहीं की जा सकती। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति के पास एक गाय है और उसे वस्तुओं जैसे कपड़ा अनाज आदि की आवश्यकता है। तब कितनी गाय कपड़े के बदले में और कितनी गाय खाद्यान्नों के बदले में दी जा सकती हैं? इसका निर्धारण करना बहुत कठिन है क्योंकि गाय को अनेक भागों में नहीं बांटा जा सकता है।

4.3 **भविष्य के भुगतान में कठिनाई** : वस्तु विनिमय व्यवस्था में वस्तुओं का भविष्य में भुगतान करने में कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती है। क्योंकि सभी वस्तुओं के मूल्य में स्थिरता का अभाव पाया जाता है।

4.4 **धन संचय का अभाव** : आलू,टमाटर, अनाज आदि को संचित नहीं किया जा सकता। इसलिए वस्तुओं की दशा में क्रय शक्ति को बचा कर रखना बहुत कठिन कार्य है।

4.5 **मूल्यों के सामान्य मापक का अभाव** : वस्तु विनिमय प्रणाली में मूल्य की एक सामान्य मापक का अभाव पाया जाता है। उदाहरण के लिए, 1 किलो चावल को 1 किलो गेहूं के बदले विनियमित किया जा सकता है, परंतु 10 किलो चावल 1 जोड़े जूतों के लिए सही विनिमय मूल्य नहीं हो सकता।

अभ्यास प्रश्न

1. आवश्यकता के दोहर संयोग की परिभाषा दें।
2. वस्तु विनियम प्रणाली के दाष या कठिनाइयों को बताएं।

© JCERT not to be republished

5. मुद्रा की उत्पत्ति

5.1 **वस्तु मुद्रा (COMMODITY MONEY)** – मनुष्य वस्तुओं के लिए वस्तु का विनिमय करते थे। जैसे – सीपीयाँ, गाय, मोती बकरी आदि।

5.2 **धातु मुद्रा (METALLIC MONEY)** – सोना, चांदी, तांबा एवं वर्तमान सिक्के आदि धातु मुद्रा के उदाहरण हैं।

प्रारंभिक आहत सिक्के (लगभग 2500 वर्ष पुराने) गुप्तकालीन सिक्के

तुगलक के सिक्के अकबर कालीन सोने के मोहर आधुनिक सिक्के

5.3 **कागजी मुद्रा(currency money)** – 1930 के बाद, अधिकतर देशों में कागजी मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया।

5.4 बैंक मुद्रा अथवा साख मुद्रा – चेक, ड्राफ्ट, क्रेडिट कार्ड या प्लास्टिक मनी आदि।

© JCERT not to be republished

बैंक चेक

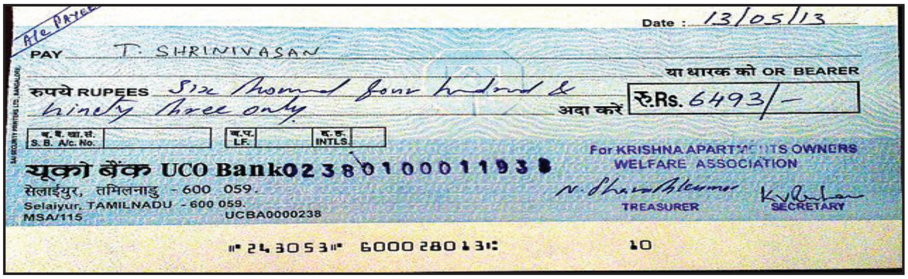

बैंक ड्राफ्ट

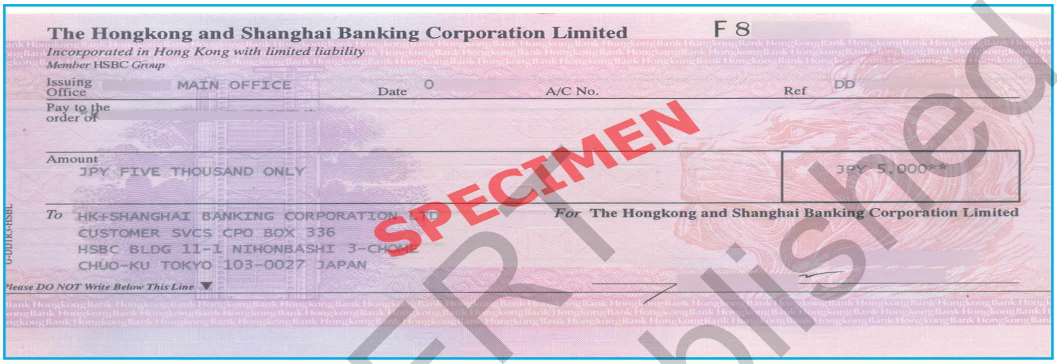

प्लास्टिक मनी या क्रैडिट कार्ड

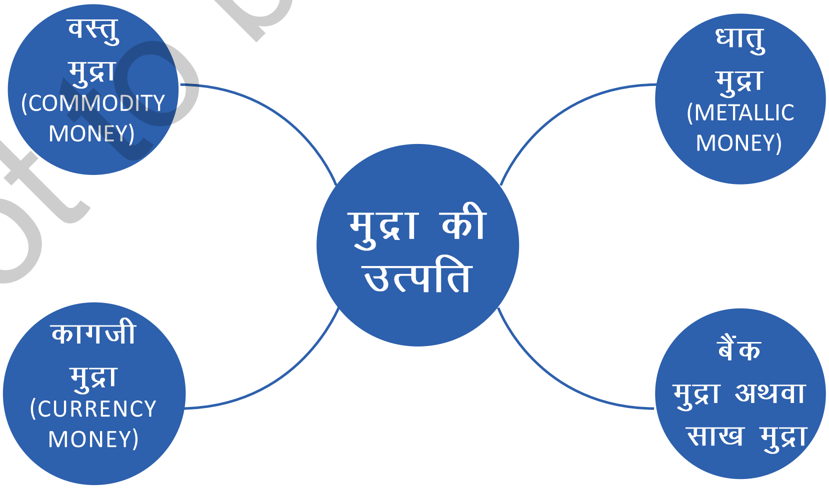

चित्र संख्या 3.2

© NCERT not to be republished

मुद्रा की परिभाषा :–

मुद्रा अर्थव्यवस्था का आधार है जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय विक्रय होता है। मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जिसे विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है। वाकर के अनुसार– ''मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करें।''("money is what money does")

6. मुद्रा के कार्य –

प्रारंभ में मुद्रा का आविष्कार विनिमय के माध्यम के रूप में हुआ, लेकिन धीरे–धीरे इसका प्रयोग दूसरे कार्यों में भी किया जाने लगा।

चित्र संख्या 3.3

6.1 **विनिमय का माध्यम –**

यह मुद्रा का आधारभूत अथवा महत्वपूर्ण कार्य है। मुद्रा के इस कार्य ने आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को हल कर दिया है।

6.2 मुद्रा का **मूल्य के मापक** के रूप में कार्य किया जाता है वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है।

6.3 मुद्रा का **मूल्य के संचय** के रूप में प्रयोग किया जाता है। धन को मुद्रा के रूप में वस्तुओं के विपरीत संचित करना आसान हो जाता है।

अभ्यास प्रश्न :–

© JCERT not to be republished

1	विनिमय के माध्यम की परिभाषा दीजिए।
2	मुद्रा के प्रयोग से वस्तुओं के पीने में में सरलता कैसे आती है?
3	वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है?
4	मुद्रा को परिभाषित कीजिए।
5	मुद्रा के किन्हीं दो कार्यों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

7. मुद्रा का आधुनिक रूप :-

हमने देखा कि मुद्रा का विकास वस्तु मुद्रा से धातु मुद्रा एवं धातु मुद्रा से वर्तमान करेंसी तथा सिक्के के रूप से होते हुए प्लास्टिक मनी (क्रेडिट कार्ड) तथा डिजिटल मुद्रा का रूप ले चुका है।

7.1 करेंसी (CURRENCY) :-

मुद्रा के आधुनिक रूपों में करेंसी – कागज के नोट और सिक्के आदि शामिल है।

- मुद्रा को विनिमय का माध्यम के रूप में इसलिए स्वीकार किया जाता है, क्योंकि किसी देश की सरकार द्वारा इसे कानूनी मान्यता प्रदान की जाती है। भारत में रुपया को मुद्रा के रूप में कानूनी मान्यता प्राप्त हैं।
- किसी भी देश का केंद्रीय बैंक सरकार की तरफ से नोट जारी करता हैं।
- भारत का केंद्रीय बैंक भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) है। जिसकी स्थापना 1 अप्रैल 1935 को भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के प्रावधानों के अनुसार हुई थी।
- आजादी के बाद भारत सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण 1 जनवरी 1949 को किया गया।
- रिजर्व बैंक के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति या संस्था को मुद्रा जारी करने का अधिकार नहीं है।
- भारत में कोई भी व्यक्ति मान्यता प्राप्त करेंसी या सिक्कों में अदायगी को अस्वीकार नहीं कर सकता। इसीलिए, रुपया व्यापक स्तर पर भारत में विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है।

7.2 बैंकों में निक्षेप या जमा (DEPOSITS IN BANKS)

बैंकों को अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है।

- बैंक का अर्थ एक ऐसी संस्था से है, जो अपने ग्राहकों से धन प्राप्त करता है तथा जरूरतमंदों को कर्ज प्रदान करता है।
- बैंकों में केवल व्यावसायिक या व्यापारिक बैंक ही ऐसी वित्तीय संस्था हैं, जो लोगों से जमा स्वीकार करते हैं तथा विभिन्न आवश्यकताओं के लिए ऋण प्रदान करते है।

> व्यावसायिक बैंक या व्यापारिक बैंक वह वित्तीय संस्था है जो लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से लोगों से जमाएं स्वीकार करता है तथा विभिन्न कार्यों हेतु ऋण प्रदान करता है।

© JCERT not to be republished

8. बैंकों के कार्य

चित्र संख्या 3.4

8.1 जनता से जमा स्वीकार करना

बैंक जनता से मुद्रा के रूप में जमा स्वीकार करता है जिसमें व्यक्ति, समूह और व्यवसायिक फर्म आदि शामिल हैं । इस पर ध्यान देना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति बैंक में मुद्रा जमा करना चाहता है, तो बैंक जमाकर्ता के नाम में खाता खोलकर जमा स्वीकार करता है।

8.2 मांग जमा

> बैंक खातों में जमा धन को मांग जमा के जरिए निकाला जा सकता है इसीलिए इस जमा को मांग जमा कहा जाता है। बैंक इसके लिए चेक सुविधा भी प्रदान करती है। चेक से भुगतान के लिए भुगतानकर्ता, जिसका किसी बैंक में खाता है, एक निश्चित रकम के लिए चेक काटता है।

- यदि जमाकर्ता अपने खाते से मुद्रा निकलवाता है तो बैंक जमाकर्ता के खाते से मुद्रा की कटौती कर देता है । दूसरी ओर जनता की कुछ प्रकार की जमाओं पर बैंक ब्याज देता है।
- बैंक जमाकर्ताओं को चैकबुक देता है । जमाकर्ताओं के द्वारा चौकों का प्रयोग बैंक से मुद्रा निकालने और किसी पक्ष को बैंक के माध्यम से नकद का इस्तेमाल किए बिना भुगतान करने के लिए किया जाता है ।

8.3 ऋण देना

- बैंक उन लोगों को ऋण देता है जो ऋण लेना चाहते हैं और जिनकी भविष्य में उस ऋण की वापसी भुगतान करने की क्षमता है।
- बैंक जनता से जो धन जमा खातों में स्वीकार करते हैं उसका क्या करते हैं?
- यहां एक दिलचस्प क्रियाविधि काम कर रही है। बैंक जमा रकम का एक छोटा हिस्सा अपने पास नगद के रूप में रखते हैं।
- बैंक जमा राशि के एक बड़े भाग को ऋण देने के लिए इस्तेमाल करते हैं। विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए ऋण की बहुत मांग रहती है।
- इस तरह बैंक जमाकर्ता एवं कर्जदार के बीच मध्यस्थता का काम करते हैं। बैंक जमा पर जो ब्याज देते हैं उससे ज्यादा ब्याज ऋण पर लेते हैं। कर्जदार से लिए गए ब्याज और जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज के बीच का अंतर बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत है।

© JCERT not to be republished

आइए, यह जानने की कोशिश करते हैं कि चेक द्वारा भुगतान कैसे होता है तथा इसे एक उदाहरण के द्वारा करते हैं।

चेक द्वारा भुगतान

जूता निर्माता एम. सलीम को चमड़ा आपूर्तिकर्ता को भुगतान करना है और इसके लिए वह एक विशेष रकम का चेक लिखता है। अर्थात् जूता निर्माता अपने बैंक को चमड़ा आपूर्तिकर्ता को यह रकम देने का आदेश देता है। चमड़ा आपूर्तिकर्ता यह चेक ले जाकर अपने बैंक खाते में जमा कर देता है। धन एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में कुछ दिनों में अंतरित हो जाता है। यह लेन–देन बिना नकद की अदायगी के पूरा हो जाता है।

TRUTH-LOVE-PEACE

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न

1. उस संस्था का नाम बताओ जिसमें कोई अपनी अधिशेष मुद्रा जमा कर सकता है।
2. भारतीय करेंसी का नाम बताएं।
3. व्यापारिक बैंकों के नाम बताएं।
4. किन्हीं दो ऐसे उद्देश्यों को बताएं जिसके लिए आप बैंक से ऋण लेना चाहेंगे।

तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बैंकों के राष्ट्रीयकरण का अहम फैसला किया था। उन्होंने 19 जुलाई 1969 को 14 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था। इसी तरह 15 अप्रैल सन 1980 को निजी क्षेत्र के छः और बैंक राष्ट्रीयकृत किये गये।

8.4 साख

साख का अर्थ विश्वास या भरोसा है। जिस व्यक्ति पर जितना अधिक विश्वास किया जाता है, उसकी साख उतनी ही अधिक होती है।

- अर्थशास्त्र में साख का अर्थ ऋण भुगतान करने की क्षमता या शक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है।
- जब बैंक किसी व्यक्ति को ऋण देता है तो वह भविष्य में उस व्यक्ति से ऋण वसूल करने का प्रबंध भी कर लेता है।
- जब एक बैंक लोगों को ऋण देता है तो बैंक ऋणदाता बन जाता है और ऋण लेने वाला व्यक्ति ऋणी कहलाता है।

यदि ऋण उत्पादक कार्यों हेतु लिया जाए तो यह सकारात्मक भूमिका अदा करता है, परंतु अनुत्पादक कार्यों के लिए लिया गया दिन नकारात्मक भूमिका अदा करता है।

उत्पादक ऋण	अनुत्पादक ऋण
● उत्पादक ऋण वे ऋण होते हैं जिन्हें उत्पादन के कार्यों के लिए लिया जाता है। जैसे– उद्योग लगाना, व्यापार करना, उत्पादन तकनीक में परिवर्तन करने के लिए या अन्य उत्पादन कार्य करने के लिए जिससे आय में वृद्धि हो आदि।	● अनुत्पादक ऋण वे ऋण होते हैं, जिनके व्यय इसे ना तो आय प्राप्त होती हैं और ना उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। जैसे शादी – विवाह, भोज, या अन्य कोई उपभोग कार्यों के लिए लिया गया ऋण आदि।

(1) त्यौहार का मौसम

अब से दो महीने बाद त्यौहार का मौसम है और जूता निर्माता सलीम के पास शहर के एक बड़े व्यापारी से 3000 जोड़ी जूते की माँग आती है, जिसे उसे एक महीने के अन्दर पूरा करना है। उत्पादन के काम को समय पर पूरा करने के लिए सलीम को सिलाई और चिपकाने के काम के लिए अतिरिक्त मजदूर रखने की आवश्यकता है। उसे कच्चा माल भी खरीदना है। इन सभी खर्चों को पूरा करने के लिए सलीम दो स्त्रोतों से ऋण लेता है। पहला, वह चमड़ा व्यापारी को चमड़ा अभी देने का प्रस्ताव रखता है और बाद में भुगतान करने का वादा करता है। दूसरा, वह इस बड़े व्यापारी से 1000 जूतों के लिए अग्रिम भुगतान के रूप में नकद कर्ज लेता है तथा महीना खत्म होने से पहले पूरा आर्डर पहुँचाने का वादा करता है।

महीने के आखिर में सलीम जूते पहुँचाने में कामयाब होता है। उसे अच्छा–खासा लाभ भी होता है और वह उधार लिए धन की अदायगी भी कर देता है।

© JCERT not to be republished

(2) स्वप्ना की समस्या

एक छोटी किसान स्वप्ना अपनी 3 एकड़ जमीन पर मूँगफली उगाती है। वह इस उम्मीद पर कि फसल तैयार होने पर कर्ज को अदा कर देगी, खेती के खर्चों के लिए साहूकार से ऋण लेती है। फसल पर कीटनाशकों के हमले से फसल बर्बाद हो जाती है। हालाँकि स्वप्ना फसल पर महँगी कीटनाशक दवाइयाँ छिड़कती है, उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। वह साहूकार का कर्ज लौटाने में असफल रहती है और साल के अंदर यह कर्ज बड़ी रकम बन जाता है। अगले साल, स्वप्ना खेती के लिए दुबारा उधार लेती है। इस साल फसल सामान्य रहती है, लेकिन इतनी कमाई नहीं होती कि वह अपना कर्ज वापस कर सके। वह कर्ज में फँस जाती है। उसे कर्ज को चुकाने के लिए अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ता है।

- सलीम उत्पादन कार्य के लिए कार्यशील पूंजी की जरूरतों को ऋण के द्वारा पूरा करता है और वह अपनी आय बढ़ा पता है। इस प्रकार ऋण एक महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका अदा करता है।

8.5 कर्ज जाल

- स्वप्ना ने ऋण आय बढ़ाने के उद्देश्य से लिया था, परंतु फसल बर्बाद होने से ऋण ने स्वप्ना की आय बढ़ाने के बजाय उसकी स्थिति बदतर कर दी।
- ऋण चुकाने के लिए स्वप्ना को जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ा। इसे आम भाषा में कर्ज – जाल कहते हैं।

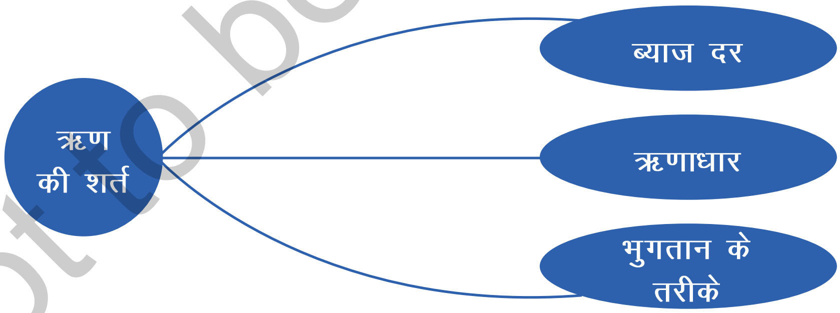

चित्र संख्या 3.5

ब्याज दर – जिसे ऋणी ऋणदाता को मूलधन के साथ अदा करता है।

ऋणाधार – ऋणदाता ऋण देने के पूर्व गारंटी के तौर पर ऋणाधार अर्थात् कुछ वस्तुओं या संपत्ति गिरवी रखवाता है (जैसे भूमि, मकान, गाड़ी, पशु, सोना, चांदी आदि) ताकि ऋणी द्वारा ऋण का भुगतान नहीं करने पर ऋणदाता ऋणाधार वस्तु को बेचकर कर्ज की रकम वसूल कर सके।

© JCERT not to be republished

भुगतान – ऋणी मूलधन के साथ–साथ ब्याज का भी अनिवार्य रूप से भुगतान करेगा।

अभ्यास प्रश्न

1 भारतीय करेंसी क्या है?

2 भारत के केंद्रीय बैंक का क्या नाम है, एवं इसकी स्थापना कब हुई?

3 पहली बार बैंकों का राष्ट्रीयकरण कब किया गया तथा कितनी बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ?

4 बैंकों में निक्षेप का क्या अर्थ है?

5 मांग जमा से क्या समझते हैं।

6 उत्पादक तथा अनुत्पादक ऋण के अंतर को समझाएं।

9. भारत में औपचारिक क्षेत्र में साख

9.1 साख या ऋण के स्रोत

a. **औपचारिक क्षेत्र** – औपचारिक क्षेत्र से ऋण व्यापारिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सहकारी समितियां आदि से प्राप्त होते हैं।

b. **अनौपचारिक क्षेत्र** – अनौपचारिक क्षेत्र के अंतर्गत साहूकार, महाजन, व्यापारी, रिश्तेदार इत्यादि आते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर नजर रखता है, तथा इनका नियंत्रण एवं नियमन करता है।

- अनौपचारिक क्षेत्र में ऋणदाताओं की गतिविधियों की देखरेख करने वाली कोई संस्था नहीं है। वे मनमानी दरों पर ऋण देते हैं। जिसका ब्याज दर 20% से 40% तक होता है।
- औपचारिक ऋणदाताओं की तुलना में अनौपचारिक क्षेत्र के ज्यादातर ऋणदाता कहीं अधिक ब्याज वसूल करते हैं।
- इन सभी कारणों को देखते हुए बैंकों और सहकारी समितियों को ज्यादा ऋण देना चाहिए। इससे लोगों की आय बढ़ सकती है और बहुत से लोग अपनी विभिन्न जरूरतों को पूरा करने के लिए सस्ती दर पर कर्ज ले सकेंगे।
- इससे स्वरोजगार को बढ़ावा मिलेगा और लोग नई तकनीक से कृषि कार्य, व्यापार तथा छोटे उद्योग इत्यादि लगाने के लिए प्रोत्साहित होंगे।
- सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज देश के विकास के लिए अति आवश्यक है।

© JCERT not to be republished

1. 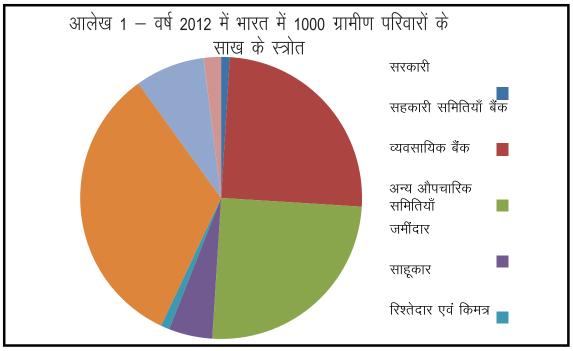

2. 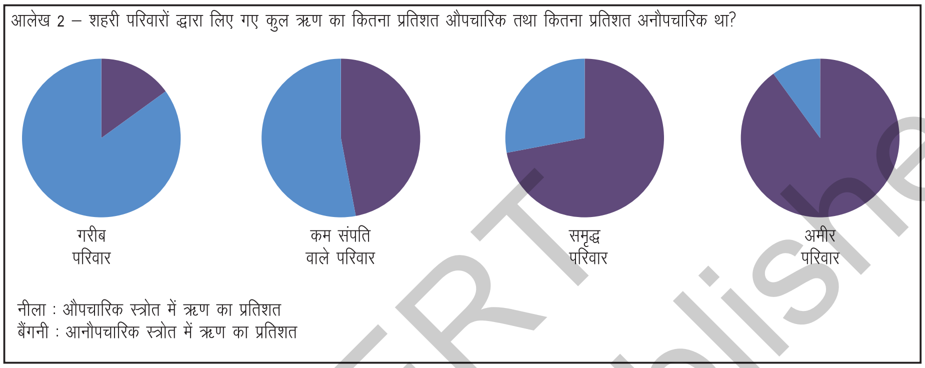

9.2 निर्धनों के स्वयं सहायता समूह :

- ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों विशेषकर महिलाओं को छोटे–छोटे स्वयं सहायता समूह में संगठित करने और उनकी बचत पूंजी को एकत्रित करने पर आधारित है।
- एक विशेष स्वयं सहायता समूह में एक दूसरे के पड़ोसी 15 से 20 सदस्य होते हैं, जो नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं।
- सदस्य छोटे कर्ज समूह से ही कर्ज ले सकते हैं। समूह इन कर्जों पर ब्याज लेता है लेकिन यह साहूकार द्वारा लिए जाने वाले ब्याज से कम होता है।
- 1 या 2 वर्ष के बाद, अगर समूह नियमित रूप से बचत करता है तो समूह बैंक से ऋण लेने के योग्य हो जाता है। ऋण समूह के नाम से दिया जाता हैं।
- सदस्यों को छोटे–छोटे ऋण उत्पादक एवं अनुत्पादक कार्यों के लिए दिए जाते हैं, जैसे गिरवी जमीन छुड़ाने के लिए, खाद, बीज, कपड़े, घर बनाने, सिलाई मशीन, हथकरघा, पशु खरीदने, शादी – विवाह इत्यादि कार्यों के लिए दिए जाते हैं।

समूह दिए जाने वाले ऋण – उसका लक्ष्य, उसकी रकम, ब्याज दर, वापस लौट आने की अवधि आदि के बारे में निर्णय करता है। कोई सदस्य अगर ऋण वापस नहीं लौटाता तो समूह के अन्य सदस्य इस मामले को गंभीरता से लेते हैं।

© JCERT not to be republished

इस तरह समूह ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबों को संगठित करने में मदद करते हैं। इससे ना केवल महिलाएं आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो जाती हैं, बल्कि समूह की नियमित बैठकों के जरिए लोगों को एक आम मंच मिल जाता है, जहां वह तरह तरह के सामाजिक विषयों जैसे स्वास्थ्य, पोषण और घरेलू हिंसा इत्यादि पर आपस में चर्चा कर पाती है।

महिलाओं की स्वयं सहायता समूह की बैठक

बांग्लादेश का ग्रामीण बैंक

बांग्लादेश ग्रामीण बैंक का उचित ब्याज दरों पर गरीबों की ऋण जरूरतों को पूरा करने का बड़ा सफल इतिहास रहा है। इसकी शुरुआत 1970 में एक छोटे पैमाने से हुई। वर्ष 2018 में ग्रामीण बैंक के अब 9 लाख सदस्य थे जो बांग्लादेश के 81,600 गाँवों में फैले हुए थे। इससे ऋण लेने वाली ज़्यादातर महिलाएँ हैं जिनका संबंध समाज के गरीब तबके से है। इन कर्जदारों ने दिखा दिया है कि न केवल गरीब महिलाएँ भरोसेमंद कर्जदार हैं, बल्कि वे विभिन्न तरह की छोटी आय वाली गतिविधियों को सफलतापूर्वक शुरू करने और चला सकने में सक्षम हैं।

प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस ग्रामीण बैंक के संस्थापक एवं 2006 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित हैं।

© JCERT not to be republished

प्रश्नावली

सही उत्तर का चयन करें –

1. ऋण शर्तों में सम्मिलित है

a. ब्याज दर
b. समर्थक ऋणधार
c. आवश्यक कागजात
d. उपरोक्त सभी

2. वर्तमान में कागज के करेंसी के अलावा किस रूप में धन का उपयोग बढ़ता जा रहा है?

a. वस्तु के पैसे
b. धातु पैसे
c. प्लास्टिक मनी
d. उपरोक्त सभी

3. क्रेडिट या ऋण में समझौते किसके बीच होता है?

a. ऋणदाता और उधारकर्ता
b. उपभोक्ता और निर्माता
c. सरकार और कर दाता
d. उपरोक्त सभी

4. सिक्कों के प्रयोग से पहले निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था?

a. अनाज
b. मकान
c. खेत
d. दुकान

5. धनी परिवारों के लिए साख का कौन सा मुख्य स्रोत है?

a. अनौपचारिक क्षेत्र
b. औपचारिक क्षेत्र
c. अनौपचारिक तथा औपचारिक क्षेत्र
d. उपरोक्त में से कोई नहीं

6. कुल जमा का वह हिस्सा जो एक बैंक अपने पास नकद के रूप में रखता है?

a. शून्य
b. एक छोटा हिस्सा
c. एक बड़ा हिस्सा
d. आय का 100%

7. धन के आधुनिक रूप क्या है?

a. मुद्रा
b. प्लास्टिक मनी
c. डिमांड डिपशजिट (मांग जमा)
d. उपरोक्त सभी

8. भारत में मुद्रा जारी करने का अधिकार किसे है?

a. व्यापारिक बैंक
b. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
c. राष्ट्रीय बैंक
d. भारतीय रिजर्व बैंक

© JCERT not to be republished

9. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना कब किया गया।

a. 1969 b. 1935

c. 1949 d. 1975

10. औपचारिक स्रोतों के कामकाज की निगरानी कौन करता है?

a. केंद्र सरकार b. भारतीय रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

c. स्टेट बैंक अश्फ इंडिया d. राज्य सरकार

11. कौन धन का आधुनिक रूप नहीं है?

a. करेंसी नोट b. मांग जमा

c. चांदी के सिक्के d. चेक

12. पूंजी की समस्या को दूर करने के लिए उधारकर्ताओं की सहायता कौन करता है?

a. स्वयं सहायता समूह b. राज्य सरकार

c. साहूकार d. रिश्तेदार

13. निम्न में कौन ऋण प्राप्त करने के औपचारिक स्रोत हैं?

a. साहूकार b. व्यापारी

c. जमींदार एवं महाजन d. सहकारी समितियां

14. बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक से कर्ज लेने वाले अधिकांश होते हैं?

a. पुरुष b. महिलाएं

c. असहाय d. यह सभी

15. अनौपचारिक स्रोत ऋण राशि पर ब्याज लेते हैं?

a. बहुत अधिक b. कम

c. नहीं लेते d. बहुत कम

16. बैंक ऋण नहीं देते हैं?

a. सीमांत किसान b. धनी किसान

c. व्यापारी d. उचित दस्तावेजों के बिना

17. निम्नलिखित में साख के औपचारिक साधन नहीं है?

a. बैंक b. सहकारी समितियां

c. साहूकार d. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

© JCERT not to be republished

18. भारत में विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार है।

a. डॉलर
b. पाउंड
c. यूरो
d. रुपया

19. मुद्रा विनिमय का माध्यम है क्योंकि

a. इसे किसी वस्तु या सेवा के लिए सरलता से बदला जा सकता है
b. दोहरे सहयोग की आवश्यकता की समस्या से छुटकारा
c. विनिमय प्रक्रिया में मध्यस्थता का कार्य करती है
d. उपरोक्त सभी

20. रिजर्व बैंक की स्थापना कब हुई

a. 1975
b. 1949
c. 1935
d. 1947

21. निम्न में कौन राष्ट्रीय कृत बैंक है

a. ICICI बैंक
b. एक्सिस बैंक
c. RBI
d. स्टेट बैंक आफ इंडिया

© JCERT not to be republished

उत्तर

1-d, 2-c, 3-a, 4-a, 5-b, 6-b, 7-d, 8-d, 9-d, 10-b, 11-c, 12-a, 13-d, 14-b, 15-a, 16-d, 17-c, 18-d, 19-d, 20-c, 21-d

प्रश्नोत्तर

1. जोखिम वाली परिस्थितियों में ऋण कर्जदार के लिए और समस्या खड़ी कर सकता है। स्पष्ट कीजिए

उत्तरः निश्चित रूप से ऋण आय बढ़ाने में मदद करता है। जिससे व्यक्ति की स्थिति पहले की तुलना में बेहतर हो जाती है। परंतु जोखिम वाली परिस्थितियों में ऋण कर्जदार के लिए और भी समस्याएं खड़ी कर सकता है। ऋण कर्जदार को और भी बदतर स्थिति में पहुंचा सकता है। इसे निम्न उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं।

किसान खेत के लिए HYV बीजों, रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, सिंचाई, कृषि औजारों आदि के लिए पैसे खर्च करता है। वह प्रायः फसल के प्रारंभ में ऋण लेते हैं। और उम्मीद करते हैं कि फसल अच्छी होगी। जिससे ऋण चुकता कर देंगे। परंतु यदि कम वर्षा, अतिवृष्टि, चक्रवात आदि के कारण फसल बर्बाद हो जाए तो वह ऋण कैसे चुकता करेगा। ऐसी स्थिति में किसान को ऋण चुकता के लिए अपने भूमि का एक टुकड़ा या वस्तुओं को बेचना पड़ेगा। इस कारण किसान की स्थिति पहले की तुलना में और बदतर हो जाएगी।

2. मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या को किस तरह दूर करती है अपनी ओर से उदाहरण देकर समझाएं।

उत्तरः वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का आदान–प्रदान किया जाता है। इसमें एक वस्तु लेते हैं तो दूसरी वस्तु देते हैं। इस कारण वस्तु विनिमय प्रणाली में मांगों का दोहरा संयोग होना एक आवश्यक विशेषता है। जबकि इसके विपरीत वस्तुओं के लेन–देन में मुद्रा का प्रयोग किया जाता है वहां मुद्रा, विनिमय प्रक्रिया में एक मध्यस्थता के रूप में कार्य करती है। इसे निम्न उदाहरण से समझ सकते हैं।

उदाहरण के लिए एक व्यक्ति को कपड़ा चाहिए और उसके बदले में देने के लिए चावल है तो वह विनिमय तब कर सकेगा जब उसे ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो चावल के बदले कपड़ा दे सके। इस प्रकार आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की समस्या उत्पन्न होती है। जबकि मुद्रा विनिमय प्रणाली में किसान को बाजार में केवल अपने अनाज बेचने होते हैं। और अनाज बेचकर मुद्रा प्राप्त करना होता है। इस मुद्रा से न केवल वह कपड़े और जूते खरीद सकता है बल्कि अपनी जरूरत की हर चीजों को खरीद सकता है।

3. अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों और जरूरतमंद लोगों के बीच बैंक किस तरह मध्यस्थता करते हैं?

उत्तरः बैंक अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों से जमाए स्वीकार करते हैं। जैसे रेकरिंग डिपाजिट, फिक्स डिपोजिट, बचत जमाऐं इत्यादि रूपों में। और बैंक इन जमाओं के लिए उचित ब्याज भी देती है। बैंक जमाऐं स्वीकार कर उन जमाओं का एक छोटा हिस्सा 15% अपने पास रखते हैं। ताकि जमाकर्ताओं द्वारा धन निकालने की मांग को पूरा किया जा सके। साथ ही बाकी 85% हिस्सा बैंक जरूरतमंद लोगों के बीच ऋण देने में प्रयोग करते हैं। इस प्रकार बैक अतिरिक्त मुद्रा वाले लोगों और जरूरतमंद लोगों के बीच मध्यस्थता करता है।

4. 10 के नोट को देखिए इसके ऊपर क्या लिखा है। क्या आप इस कथन की व्याख्या कर सकते हैं?

उत्तरः "10 रुपए के नोट के ऊपरी भाग पर भारतीय रिजर्व बैंक और केंद्र सरकार द्वारा प्रत्याभूत लिखा हुआ है।" भारत में भारतीय रिजर्व बैंक केंद्र सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करता है। इस कथन का मतलब है कि करेंसी अर्थात कागज के नोट केंद्र सरकार द्वारा अधिकृत या प्रत्याभूत है। इसका अर्थ है भारतीय कानून भुगतान के माध्यम के रूप में करेंसी नोट का प्रयोग वैध है। जिसे भारत में लेन–देन में कोई इंकार नहीं कर सकता।इस नोट के बीच में भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर का हस्ताक्षर रहता है। जहां लिखा होता है कि "मैं धारक को 10 रुपए अदा करने का वचन देता हूं।"

5. हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की क्यों जरूरत है?

उत्तरः हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके निम्नलिखित कारण है :–

A. **शर्त मुक्त ऋण** :– ऊंची ब्याज दर के अतिरिक्त अनौपचारिक क्षेत्र जैसे साहूकार, मित्र, व्यापारी द्वारा ऋण के बदले कई तरह की शर्तें रहती हैं। जैसे वह किसानों को कम दरों

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

पर फसल बेचने का भी वादा करवाते हैं। जबकि औपचारिक क्षेत्र में ऋण की शर्तें इतनी कठिन नहीं होती।

B. **RBI द्वारा नियंत्रण** :– RBI ऋणों के औपचारिक स्रोतों के कामकाज, ब्याज की दरें आदि का निरीक्षण करता है। इसके विपरीत अनौपचारिक क्षेत्र में ऐसा कोई संगठन नहीं है।

C. **निम्न ब्याज दर** :– ऋण के औपचारिक स्रोतों जैसे बैंक, सहकारी बैंक आदि में ब्याज दर अनौपचारिक क्षेत्र से कम रहता है।

D. **ग्रामीण क्षेत्र के विकास के लिए** :– ऋण के औपचारिक स्रोतों जैसे बैंक, सरकारी बैंक इत्यादि का एक उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करना भी होता है। ये ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए ऋण दरों में भी कटौती करती है।

इस कारण हमें भारत में ऋण के औपचारिक स्रोतों को बढ़ाने की जरूरत है।

6. **गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूह के संगठन के पीछे मूल विचार क्या है? अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।**

उत्तरः गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूहों के संगठनों के पीछे मूल विचार ग्रामीण गरीब, विशेषकर महिलाओं को स्वयं सहायता संगठनों में संगठित और उनमें बचतों को एकत्रित करना है। ये संगठन समर्थक ऋणाधार के बिना ही उचित ब्याज दर पर सदस्यों को ऋण प्रदान करते हैं। इससे संगठन में मौजूद लोगों को सस्ता ऋण उपलब्ध हो जाता है।

स्वयं सहायता समूह के संगठनों के मुख्य उद्देश्य :–

(i) ग्रामीण गरीबों, विशेषकर महिलाओं को छोटे स्वयं सहायता समूह में संगठित करना तथा उन्हें लाभ पहुंचाा।

(ii) सदस्यों के बीच बचत की भावना विकसित करना तथा आवश्यकता पर उनका पैसा उन्हीं के उपयोग में लाना।

(iii) समर्थक ऋणाधार के बिना ऋण प्रदान करना।

(iv) विभिन्न उद्देश्यों के लिए समय पर ऋण उपलब्ध कराना।

(v) उचित ब्याज दर पर ऋण प्रदान करना।

(vi) शिक्षा,स्वास्थ्य, पोषण और घरेलू मारपीट जैसे समाजिक मुद्दों पर चर्चा और कार्यवाही का एक मंच प्रदान करना।

7. **क्या कारण है कि बैंक कुछ कर्जदारों को कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होते?**

उत्तरः कोई भी बैंक किसी व्यक्ति की ऋण अदायगी की क्षमता के आधार पर ही ऋण देता है। बैंक किसी भी जोखिम वाले काम के लिये ऋण नहीं देते हैं। और जब कर्जदार किसी ऐसे व्यक्ति को उपलब्ध कराने में असमर्थ रहता है जो उसके कर्ज न चुकाने पर उसका कर्ज चुका सके इस स्थिति में भी बैंक उसे कर्ज नहीं देते हैं। इसलिये बैंक कुछ चुनिंदा लोगों को ही ऋण देते हैं।

© JCERT not to be republished

कुछ मुख्य बिंदु –

(i) समर्थक ऋणाधार का अभाव:– बैंक उन गरीब व्यक्तियों को ऋण देना नहीं चाहते जिसके पास समर्थक ऋणाधार नहीं होता है। इसका कारण यह है कि बैंक कर्जदारों को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता है। यदि कर्जदार ऋण नहीं चुका पाता तो बैंक को समर्थक ऋणाधार बेचने का अधिकार होता है।

(ii) कर्ज भुगतान का अभाव:– वैसे कर्जदार जिसने अपने पुराने कर्ज का भुगतान नहीं किया है। बैंक उसे पुनः कर्ज देने के लिए तैयार नहीं होता।

(iii) व्यवसाय का स्वरूप:– बैंक उन कर्जदारों को ऋण देने के लिए तैयार नहीं होते जिनका व्यवसाय जोखिम वाला होता है।

(iv) लाभ मुख्य उद्देश्य:– बैंक का भी मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है। इस कारण उन्हें ऋण सोच समझकर देना पड़ता है।

उपरोक्त कारणों से बैंक कर्जदारों को ऋण देने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

8. भारतीय रिजर्व बैंक अन्य बैंकों की गतिविधियों पर किस तरह नजर रखता है? यह जरूरी क्यों है?

अथवा

भारत में कौन सी सरकारी संस्था ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखती है? इस संस्था की कार्यप्रणाली को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केंद्रीय बैंक है। यह भारत के बैंकिंग सेक्टर के लिये नीति निर्धारण का काम करता हैं और ऋणों के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नजर रखता है। बैंक किसी भी अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डालते हैं इसलिये बैंकिंग सेक्टर के लिए सही नियम और कानून की जरूरत होती है। रिजर्व बैंक उन पर अनेक ढंग से नजर रखता है –

(i) भारत में व्यवसायिक बैंकों को अपने नकद रिजर्व का एक भाग भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के पास रखना आवश्यक होता है। यह ग्राहक द्वारा जमा का कम से कम 15% राशि होती है।

(ii) RBI यह भी नजर रखता है कि बैंक न केवल लाभ कमाने वाले व्यवसायों और व्यापारियों को ही ऋण दें। बल्कि छोटे किसानों, लघु उद्यमियों, छोटे कर्जदारों इत्यादि को भी ऋण प्रदान करें।

(iii) भारत के सभी व्यवसायिक बैंकों को समय–समय पर यह जानकारी देनी पड़ती है कि वह कितना और किनको ऋण दे रहे हैं। तथा ऋण देने की ब्याज दर क्या है। यह मुख्यतः छोटे कर्जदारों, किसानों, लघु उद्यमियों इत्यादि को संरक्षण देने के लिए आवश्यक है।

उपरोक्त तरीके से RBI अन्य बैंकों की गतिविधियों पर नजर रखता है।

© JCERT not to be republished

9. विकास में ऋण की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर : आर्थिक विकास में ऋण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसे निम्न रूप से देखा जा सकता है :–

(i) सस्ता और वहनीय ऋण देश के विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है।

(ii) विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं के लिए ऋण की बड़ी मांग है।

(iii) ऋण व्यक्तियों के उत्पादन के कार्यशील खर्चों और समय पर उत्पादन पूरा करने में सहायता करता है। इससे उनकी आय में वृद्धि होती है।

(iv) कई लोग विभिन्न कार्यों के लिए ऋण लेते हैं जैसे खेती, व्यवसाय, लघु उद्यमों की स्थापना इत्यादि के लिए।

(v) लोग ऋण लेकर नए उद्योग लगाते हैं और वस्तुओं का उत्पादन करते हैं।

10. मानव को एक छोटा व्यवसाय करने के लिए ऋण की जरूरत है। मानव किस आधार पर यह निश्चित करेगा कि उसे यह ऋण बैंक से लेना चाहिए या साहूकार से? चर्चा कीजिए।

उत्तर: मानव को ऋण बैंक या साहूकार से लेना है यह निम्न आधारों पर तय होता है :–

(i) निम्न ब्याज दर

(ii) समर्थक ऋणाधार और कागजातों की कम से कम आवश्यकता

(iii) ऋण भुगतान के आसान तरीके

उपरोक्त सभी सुविधाएं साहुकार की तुलना में बैंकों में होती है। इस कारण बैंकों में ऋण लेना साहूकार की तुलना में अच्छा है।

11. भारत में 80 प्रतिशत किसान छोटे किसान है, जिन्हें खेती करने के लिए ऋण की जरूरत होती है :

(क) बैंक छोटे किसानों को ऋण देने से क्यों हिचकिचा सकते है?

(ख) वे दूसरे स्रोत कौन है, जिनसे छोटे किसान कर्ज ले सकते है।

(ग) उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि किस तरह ऋण की शर्तें छोटे किसानों के प्रतिकूल हो सकती है।

(घ) सुझाव दीजिए कि किस तरह छोटे किसानों को सस्ता ऋण उपलब्ध कराया जा सकता है।

उत्तर : (क) बैंक ऋण के लिए गारंटी के तौर पर समर्थक ऋणाधार और उचित कागजात की मांग करता है। परंतु छोटे किसानों के पास उचित कागजात और समर्थक ऋणाधार का अभाव होता है। फसल का कोई निश्चित उत्पादन न होने के कारण यह कार्य जोखिम भरा होता है। इस कारण कई बार किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। जिससे यह छोटे किसान बैंक को समय पर ऋण का भुगतान नहीं कर पाते। यही वजह है कि बैंक छोटे किसानों को ऋण देने से हिचकिचा सकते हैं।

© JCERT not to be republished

(ख) छोटे किसान बैंक के अतिरिक्त साहूकारों, व्यापारियों, बड़े भूमिपतियों, सहकारी बैंकों, स्वयं सहायता समूहों, रिश्तेदारों आदि से ऋण ले सकते हैं।

(ग) कृषि एक जोखिम भरा कार्य है क्योंकि यह मानसून पर निर्भर करता है। इस कारण बैंक छोटे किसानों को ऋण देते समय आना–कानी करते हैं। स्थानीय साहूकारों से उन्हें ऋण कुछ शर्तों से प्राप्त हो जाती है। इसे एक उदाहरण से समझते हैं।

मोहन एक छोटा किसान है। उसने मानसून प्रारंभ के साथ ही धान की फसल के लिए 3% प्रति माह की ऊंची ब्याज दर पर स्थानीय साहूकार से कर्ज लेता है। परंतु मानसून के खराब होने के कारण फसल सूख जाता है। मोहन को ऋण चुकता करने के लिए भूमि का एक टुकड़ा बेचना पड़ता है।ऐसी स्थिति में ऋण उसके लिए बेहद नुकसानदायक सिद्ध होता है।

(घ) छोटे किसानों को निम्नलिखित स्रोतों से सस्ता ऋण उपलब्ध हो सकता हैः–

(i) बैंक

(ii) प्राथमिक कृषि सहकारी समितियां (पैक्स Pacs)

(iii) स्वयं सहायता समूह (SHGS)

कुछ अतिरिक्त प्रश्न

1. भारत में केंद्रीय सरकार के तरफ से करेंसी नोट कौन जारी करता है?

उत्तरः केंद्रीय सरकार की ओर से करेंसी नोट भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) जारी करता है।

2. साख की प्रमुख स्रोत की व्याख्या करें?

उत्तर : साख के दो प्रमुख स्रोत है।

(i) **औपचारिक स्रोत** :– इसके अंतर्गत ऋण के वे स्रोत शामिल होते हैं। जो सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं। इन्हें सरकारी नियमों और विनियमों का पालन करना पड़ता है। जैसेः– बैंक, सहकारी समितियां और स्वयं सहायता समूह।

(ii) **अनौपचारिक स्रोत** :– इसके अंतर्गत वे छोटी और छिट–पुट इकाइयां शामिल है। जो सरकार के नियंत्रण से प्रायः बाहर होती हैं। हालांकि इनके लिए भी सरकारी नियम और विनियम होते हैं। परंतु यहां उनका पालन नहीं किया जाता है। जैसेः– साहूकार, व्यापारी, नियोक्ता और रिश्तेदार आदि।

3. ऋण के औपचारिक और अनौपचारिक स्रोतों में क्या अंतर है?

उत्तरः ऋण के औपचारिक और अनौपचारिक स्रोतों के बीच अंतर को निम्न तरह से स्पष्ट किया जा सकता है :–

ऋण के औपचारिक स्रोत :–

(i) सरकार द्वारा नियंत्रितः– इसके अंतर्गत ऋण के वे स्रोत शामिल होते हैं जो सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं। इन्हें सरकारी नियमों और विनियमों का पालन करना पड़ता है। ये स्रोत हैः– बैंक, सहकारी समितियां और स्वयं सहायता समूह।

© JCERT not to be republished

(ii) निरीक्षक उपलब्ध :– भारतीय रिजर्व बैंक ऋण के औपचारिक स्रोतों के कामकाज पर नजर रखता हैं।

(iii) लाभ एकमात्र उद्देश्य नही :– इनका उद्देश्य लाभ कमाने के साथ–साथ सामाजिक कल्याण भी है।

(iv) कम ब्याज दर :– यह सामान्यताः ऋण के औपचारिक स्रोतों की अपेक्षा ब्याज की कम दर मांगते हैं।

(v) उचित शर्त :– यह कोई अनुचित शर्त नहीं लगाते हैं।

ऋण के अनौपचारिक स्रोत :–

(i) परिस्थितियों द्वारा नियंत्रित – इसके अंतर्गत वे छोटी और छिट–पुट इकाइयां शामिल होती है। जो सरकार के नियंत्रण से प्रायः बाहर होती हैं। हालांकि इनके लिए भी सरकारी नियम और विनियम होते हैं। परंतु यहां उनका पालन नहीं किया जाता है। ये स्रोत है :– साहूकार, व्यापारी और मित्र आदि।

(ii) निरीक्षकहीन – अनौपचारिक क्षेत्र में ऐसा कोई संगठन नहीं है। जो ऋणदाताओं की ऋण क्रियाओं का निरीक्षण करता हो।

(iii) लाभ एकमात्र उद्देश्य – इनका एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना है। इसमें सामाजिक कल्याण का कोई महत्व नहीं होता है।

(iv) अधिक ब्याज दर – यह औपचारिक क्षेत्र की तुलना में कर्ज पर ब्याज की ऊंची दर मांगते हैं।

(v) अनुचित शर्त – ये ऊंची ब्याज दरों के अतिरिक्त अन्य कई कठोर शर्ते भी लगाते हैं।

12. रिक्त स्थान भरिये –

(क) ....परिवारों की ऋण की अधिकांश जरूरते अनौपाचारिक स्रोतों से पूरी होती हैं।

(ख) ....ऋण की लागत ऋण का बोझ बढ़ाती है।

(ग) ....केंद्रीय सरकार की ओर से करेंसी नोट जारी करता है।

(घ) बैंक ....पर देने वाले ब्याज से ऋण पर अधिक ब्याज लेते हैं।

(ङ) .... सम्पत्ति है जिसकी मलकियत कर्जदार के पास है जिसे वह ऋण लेने के लिए गारंटी के रूप में इस्तेमाल करता है जब तक ऋण चुकता नहीं हो जाता।

उत्तर : (क) किसान

(ख) ऊंची दर पर लिए गए

(ग) भारतीय रिजर्व बैंक

(घ) जमा

(ड़) जमीन

© JCERT not to be republished

प्रश्न 13 : सही उत्तर का चयन करें –

(क) स्वयं सहायता समूह में बचत और ऋण संबंधित अधिकतर निर्णय लिये जाते हैं।

उत्तरः सदस्यों द्वारा।

(ख) ऋण के अनौपचारिक स्रोतों में क्या शामिल नहीं है।

उत्तर : नियोक्ता।

प्रश्न. साख और मुद्रा का उदाहरण दीजिए?

उत्तरः साख के उदाहरण : क्रेडिट कार्ड, मोबाइल, नेट बैंकिंग और चेक। यह सभी साख के उदाहरण है।

मुद्रा के निम्नलिखित उदाहरण हैं –

1. कागज के नोट
2. सिक्के आदि।

© JCERT not to be republished